COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 16, Issue No: 1, Year: 2025 (January-June)
PP: 52-59

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

महात्मा गांधी के विचारों पर भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यों का प्रभाव

प्रमोद कुमार साह
(शोधार्थी)
राजनीतिक विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर दरभंगा।

सारांश :
महात्मा गांधी के विचारों एवं जीवन-दर्शन पर भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों प्रकार के साहित्य और चिंतकों का गहरा प्रभाव पड़ा। भारतीय परंपरा में वे विशेष रूप से वेद, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता, जैन धर्मग्रंथों तथा हिंदू धार्मिक संस्कारों से प्रभावित थे। उनके पारिवारिक वातावरण, माता पुतलीबाई की धार्मिकता तथा पिता कर्मचंद गांधी की सत्यनिष्ठा ने गांधीजी के व्यक्तित्व को नैतिक आधार प्रदान किया। बाल्यकाल में श्रवण कुमार और सत्यवादी हरिश्चंद्र की कथाओं ने उनके मन में सत्य, कर्तव्य और त्याग की भावना विकसित की।

गांधीजी के जीवन में गीता का विशेष महत्व था। उन्होंने गीता को अपना "आध्यात्मिक शब्दकोश" माना। गीता के निष्काम कर्म, अनासक्ति और आत्मसंयम के सिद्धांतों ने उनके सत्याग्रह और अहिंसा के विचारों को मजबूत किया। जैन धर्म के अहिंसा, अपरिग्रह और सादगी के सिद्धांतों का भी उनके जीवन और राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा। रायचंदभाई मेहता ने गांधीजी को आत्मसंयम और आध्यात्मिक चिंतन की दिशा दी, जबकि गोपाल कृष्ण गोखले ने उन्हें राजनीति में नैतिकता और सेवा का मार्ग दिखाया।

पाश्चात्य साहित्य में बाइबल के "पर्वत प्रवचन" ने गांधीजी को प्रेम, क्षमा और शत्रु के प्रति भी करुणा रखने की प्रेरणा दी। जॉन रस्किन की पुस्तक Unto This Last से गांधीजी ने सर्वोदय, श्रम की गरिमा और समानता का सिद्धांत ग्रहण किया। लियो टॉलस्टॉय ने उन्हें प्रेम, अहिंसा और साधन की पवित्रता का संदेश दिया। वहीं हेनरी डेविड थोरो के "सिविल डिसओबिडिएंस" ने गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन को वैचारिक आधार प्रदान किया। इस प्रकार गांधीजी का चिंतन भारतीय और पाश्चात्य विचारों का समन्वित एवं व्यावहारिक रूप था।

मुख्य शब्द : महात्मा गांधी , विचारों, भारतीय, पाश्चात्य साहित्यों, प्रभाव, चिंतन, व्यवहारिक, भारतीय साहित्य, पर्वत प्रवचन, सत्य,अहिंसा, प्रेम, जॉन रस्किन, लियो टॉलस्टॉय, हेनरी डेविड थोरो, नैतिक, सत्यनिष्ठा, पाश्चात्य, श्रीमद्भगवद्गीता, निष्काम कर्म, अनासक्ति, आत्मसंयम, आत्मज्ञान, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, सिद्धांत,

परिचय

महात्मा गांधी के चिंतन और व्यवहारिक जीवन पर भारतीय साहित्य एवं दर्शन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उनके विचारों में पाश्चात्य साहित्य और अनेक विदेशी विद्वानों के प्रभावों को देखा जा सकता है। गांधीजी स्वयं को हिंदू धर्म का अनुयायी मानते थे। उन्होंने जीवनभर हिंदू धर्म, धर्मशास्त्र,

© Copyright @ Authors

अध्यात्म और नैतिक आदर्शों को आत्मसात किया। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व एवं विचारधारा के निर्माण में भारतीय स्रोतों के साथ-साथ पाश्चात्य विचारकों, साहित्यकारों एवं धार्मिक ग्रंथों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। गांधीजी ने पश्चिमी चिंतकों के विचारों को केवल पढ़ा ही नहीं, बल्कि उन्हें अपने जीवन और आंदोलनों में व्यवहारिक रूप से अपनाया। विशेष रूप से बाइबल के "पर्वत प्रवचन", जॉन रस्किन, लियो टॉलस्टॉय तथा हेनरी डेविड थोरो के विचारों ने गांधीजी को सत्य, अहिंसा, प्रेम, सविनय अवज्ञा और सर्वोदय की दिशा में प्रेरित किया।

वे विशेष रूप से वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता, जैन धर्मग्रंथों, बौद्ध साहित्य, योग और वेदांत दर्शन से प्रभावित थे। वे अपने भाषणों और लेखों में इन ग्रंथों में निहित नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का उल्लेख करते रहते थे। गांधीजी ने भारतीय दार्शनिक चिंतन को केवल सैद्धांतिक रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसे अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के अनुरूप व्यावहारिक रूप भी प्रदान किया।

1. धार्मिक एवं पारिवारिक प्रभाव

गांधीजी का जन्म एक धार्मिक एवं संस्कारित परिवार में हुआ था। उनकी माता पुतलीबाई अत्यंत धार्मिक, उपवासशील एवं पूजा-पाठ में विश्वास रखने वाली महिला थीं। वे नियमित रूप से मंदिर जाती थीं तथा व्रत-उपवास का कठोर पालन करती थीं। उनके पिता कर्मचंद गांधी सत्यप्रिय, न्यायप्रिय और ईमानदार प्रशासक थे। परिवार के इन्हीं संस्कारों ने बालक मोहनदास के मन में सत्य, धर्म और नैतिकता के बीज बोए।[1]

गांधीजी बचपन से ही "राम-नाम" से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि बाल्यावस्था में भय दूर करने के लिए उन्हें "राम-नाम" का सहारा दिया गया, जिसने उनके मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ा। आगे चलकर "रामराज्य" और "हे राम" उनके जीवन-दर्शन का हिस्सा बन गए।

गांधीजी में सत्य और चरित्र के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता थी। यदि कोई उनकी नीयत पर संदेह करता था तो वे अत्यंत दुखी हो जाते थे। यह गुण उन्हें अपने परिवार की सत्यनिष्ठ परंपरा से प्राप्त हुआ था।[2]

2. श्रवण कुमार एवं सत्यवादी हरिश्चंद्र का प्रभाव

बाल्यकाल में गांधीजी पर श्रवण कुमार और सत्यवादी हरिश्चंद्र की कथाओं का गहरा प्रभाव पड़ा। श्रवण कुमार की मातृ-पितृ भक्ति तथा राजा हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा ने गांधीजी के मन में सत्य और कर्तव्यपालन की भावना को दृढ़ किया।[3]

राजा हरिश्चंद्र की कथा देखकर गांधीजी अत्यंत भावुक हो जाते थे। वे सोचते थे कि मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य का त्याग नहीं करना चाहिए। यही कारण था कि बाद में उन्होंने अपने जीवन को "सत्य के प्रयोग" का नाम दिया।[4]

© Copyright @ Authors

3. भगवद्गीता का प्रभाव

श्रीमद्भगवद्गीता गांधीजी के जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला ग्रंथ था। उन्होंने गीता को "आध्यात्मिक शब्दकोश" कहा। लंदन प्रवास के दौरान उन्होंने पहली बार गीता का अध्ययन किया और उसके "निष्काम कर्म" तथा "अनासक्ति" के सिद्धांत से अत्यधिक प्रभावित हुए।

गीता के दूसरे अध्याय के श्लोक —

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।

सङ्गत्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

— ने गांधीजी के मन पर गहरा प्रभाव डाला।[5]

गांधीजी का मानना था कि गीता मनुष्य को आत्मसंयम, कर्तव्यपालन और आत्मसाक्षात्कार का मार्ग दिखाती है। उन्होंने गीता के "अनासक्ति योग" को अपने जीवन का केंद्रीय सिद्धांत बनाया।

4. गीता का केंद्रीय भाव और गांधीजी

गांधीजी के अनुसार गीता का मूल संदेश "अनासक्ति" और "निष्काम कर्म" है। वे मानते थे कि मनुष्य को कर्म करना चाहिए, परंतु उसके फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। इसी सिद्धांत ने गांधीजी को सत्याग्रह और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

गांधीजी के अनुसार सच्चा भक्त वही है जो अहंकार, भय, ईर्ष्या और क्रोध से मुक्त हो तथा सबके प्रति करुणा और समानता का भाव रखे। गांधीजी ने इन आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का निरंतर प्रयास किया।[6]

महात्मा गांधी श्रीमद्भगवद्गीता से अत्यंत प्रभावित थे। उन्होंने एक अवसर पर कहा था—

"जब मुझे कोई संदेह घेर लेता है, जब निराशा मुझे आच्छादित कर लेती है और मुझे कहीं प्रकाश दिखाई नहीं देता, तब मैं भगवद्गीता का आश्रय लेता हूँ। उसमें मुझे ऐसा कोई श्लोक मिल जाता है जो मुझे शांति प्रदान करता है, और मैं घोर दुःख के बीच भी मुस्कराने लगता हूँ।"[7]

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग में लिखा है कि 1890 में इंग्लैंड प्रवास के दौरान दो थियोसोफिस्ट भाइयों ने उन्हें गीता पढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सर एडविन अर्नोल्ड द्वारा अनूदित The Song Celestial पढ़ी तथा बाद में गीता का संस्कृत मूल पाठ भी अध्ययन किया। गीता के दूसरे अध्याय के श्लोक 62 एवं 63 का उनके मन पर विशेष प्रभाव पड़ा।[8]

गांधीजी गीता को अपने जीवन का आध्यात्मिक मार्गदर्शक मानते थे। उनका कहना था कि जैसे अंग्रेज़ी शब्दों का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का सहारा लिया जाता है, उसी प्रकार जीवन की

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

कठिनाइयों के समाधान हेतु वे गीता का सहारा लेते थे। उन्होंने गीता को "गीता माता", "आध्यात्मिक कोश" तथा "जीवन का मार्गदर्शक" कहा।[9]

गांधीजी "अनासक्ति" के सिद्धांत से विशेष रूप से प्रभावित थे। उन्होंने अनाशक्ति योग नामक पुस्तक में गीता का गुजराती अनुवाद करते हुए कर्मयोग की व्याख्या की। उनके अनुसार गीता का केंद्रीय संदेश है— कर्म करो, परंतु फल की इच्छा मत करो। फल की आसक्ति हिंसा, असत्य और अन्याय को जन्म देती है, जबकि निष्काम कर्म सत्य और अहिंसा की ओर ले जाता है।[10]

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह आंदोलन के दौरान जब गांधीजी को कारावास हुआ, तब उन्होंने जेल में गीता का गंभीर अध्ययन किया। इससे सत्याग्रह और अहिंसा के प्रति उनका विश्वास और अधिक दृढ़ हुआ।[11]

6. भाई रायचंद (रायचंद्र भाई) का प्रभाव

रायचंदभाई मेहता गांधीजी के आध्यात्मिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले व्यक्तियों में प्रमुख थे। गांधीजी ने उन्हें अत्यंत ज्ञानी, चरित्रवान और आध्यात्मिक पुरुष माना।[12] रायचंदभाई के संपर्क में आकर गांधीजी आत्मसंयम, आत्मज्ञान और ब्रह्मचर्य की ओर प्रेरित हुए। गांधीजी ने स्वीकार किया कि आध्यात्मिक विषयों में जितना प्रभाव रायचंदभाई ने डाला, उतना किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं डाला।[13]

7. गोपाल कृष्ण गोखले का प्रभाव

गोपाल कृष्ण गोखले गांधीजी के राजनीतिक गुरु थे। गांधीजी ने स्वयं स्वीकार किया कि उन्होंने राजनीति में नैतिकता, संयम और सेवा का पाठ गोखले से सीखा।[14]

गोखले का मानना था कि राजनीति का आधार नैतिकता होना चाहिए। गांधीजी ने इसी सिद्धांत को आगे बढ़ाते हुए सत्याग्रह, अहिंसा और नैतिक साधनों को स्वतंत्रता आंदोलन का आधार बनाया। गोखले की सलाह पर गांधीजी ने भारत भ्रमण किया, जिससे उन्हें भारतीय समाज की गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक समस्याओं को समझने का अवसर मिला।[15]

जैन धर्म ग्रन्थ का प्रभाव

यद्यपि गांधीजी का जन्म जैन परिवार में नहीं हुआ था, फिर भी वे जैन धर्म के सिद्धांतों से अत्यधिक प्रभावित थे। जैन धर्म की अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य और सादगी की भावना उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गई। गांधीजी ने जैन धर्म के सिद्धांतों को केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों में भी व्यावहारिक रूप से लागू किया।[16]

गांधीजी के जीवन पर जैन चिंतक रायचंद भाई का गहरा प्रभाव पड़ा। गांधीजी का परिचय उनसे डॉ. रामजीवन मेहता ने कराया था। रायचंद भाई एक सफल व्यापारी होने के साथ-साथ आध्यात्मिक चिंतक भी थे। गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में उन्हें अत्यंत प्रतिभाशाली, ज्ञानी और वैराग्यपूर्ण व्यक्तित्व बताया है।[17]

© Copyright @ Authors

गांधीजी ने स्वीकार किया कि उनके जीवन पर जिन तीन व्यक्तियों और पुस्तकों का गहरा प्रभाव पड़ा, उनमें श्रीमद् राजचंद्र, Leo Tolstoy की पुस्तक The Kingdom of God Is Within You तथा John Ruskin की पुस्तक Unto This Last प्रमुख हैं।[18]

जैन धर्म के नैतिक सिद्धांतों, विशेषकर अहिंसा और अपरिग्रह, ने गांधीजी की राजनीतिक विचारधारा को नई दिशा दी। गांधीजी ने अहिंसा को केवल धार्मिक आदर्श नहीं माना, बल्कि उसे सामाजिक परिवर्तन और राजनीतिक संघर्ष का प्रभावशाली साधन बनाया।[19]

गांधी जी को प्रभावित करने वाले पाश्चात्य कारक

1. बाइबल का प्रभाव– गांधीजी जब बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए, तब उनकी मित्रता एक ईसाई युवक से हुई। उसी मित्र के आग्रह पर उन्होंने बाइबल का अध्ययन प्रारंभ किया। प्रारंभ में "ओल्ड टेस्टामेंट" उन्हें अधिक आकर्षित नहीं कर सका, परंतु "न्यू टेस्टामेंट" विशेषकर "सर्मन ऑन द माउंट" (पर्वत प्रवचन) ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला।

यीशु मसीह के उपदेश —

"यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा गाल भी आगे कर दो।"

— ने गांधीजी को प्रतिशोध छोड़कर प्रेम और क्षमा का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी।

पर्वत प्रवचन का प्रभाव– गांधीजी ने अपने जीवन में "बदला न लेने" और "शत्रु से भी प्रेम करने" के सिद्धांत को अपनाया। दक्षिण अफ्रीका में उन पर अनेक बार हमले हुए, लेकिन उन्होंने कभी प्रतिशोध नहीं लिया। उनका विश्वास था कि प्रेम और आत्मबल से शत्रु का हृदय परिवर्तन किया जा सकता है।यीशु का यह उपदेश गांधीजी के सत्याग्रह आंदोलन का नैतिक आधार बना। उन्होंने सत्याग्रहियों से कहा कि वे हिंसा का उत्तर हिंसा से नहीं दें, बल्कि स्वयं कष्ट सहकर अन्याय का विरोध करें।[20]

2. जॉन रस्किन का प्रभाव– जॉन रस्किन गांधीजी को प्रभावित करने वाले प्रमुख पश्चिमी विचारकों में से थे। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक Unto This Last ने गांधीजी के जीवन की दिशा बदल दी।1904 में दक्षिण अफ्रीका यात्रा के दौरान गांधीजी ने यह पुस्तक पढ़ी। उन्होंने लिखा कि पुस्तक समाप्त करने के बाद उन्हें नींद नहीं आई और उन्होंने निश्चय किया कि वे इसके सिद्धांतों को जीवन में उतारेंगे।

गांधीजी ने इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद "सर्वोदय" नाम से किया।

रस्किन से प्राप्त प्रमुख विचार

गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक से तीन मुख्य सिद्धांत ग्रहण किए—

सबकी भलाई में ही हमारी भलाई निहित है।

सभी व्यवसाय समान सम्मान के अधिकारी हैं।

किसान और मजदूर का जीवन ही सच्चा जीवन है।

© Copyright @ Authors

इन सिद्धांतों के आधार पर गांधीजी ने श्रम की गरिमा, समानता और सामूहिक कल्याण की अवधारणा को विकसित किया।[21]

3. लियो टॉलस्टॉय का प्रभाव– लियो टॉलस्टॉय गांधीजी के आध्यात्मिक और नैतिक चिंतन पर गहरा प्रभाव डालने वाले रूसी लेखक थे। उनकी पुस्तक The Kingdom of God Is Within You ने गांधीजी को अत्यधिक प्रभावित किया।

टॉलस्टॉय ने प्रेम, सत्य, सादगी और अहिंसा को मानव जीवन का आधार माना। उन्होंने हिंसा और सत्ता के दमनकारी स्वरूप का विरोध किया। गांधीजी ने इन विचारों को अपने सत्याग्रह आंदोलन में अपनाया।[२२]

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने अपने आश्रम का नाम "टॉलस्टॉय फार्म" रखा। यह केवल आश्रम नहीं था, बल्कि श्रम, समानता और सामूहिक जीवन का प्रयोग था।

टॉलस्टॉय से प्राप्त शिक्षाएँ

साधन और साध्य दोनों की पवित्रता

प्रेम और अहिंसा का महत्व

सादा जीवन और आत्मसंयम

मानव समानता और सेवा

टॉलस्टॉय और गांधीजी के बीच पत्राचार भी हुआ, जिसमें दोनों ने सत्य, प्रेम और अहिंसा पर विचार साझा किए।[23]

4. हेनरी डेविड थोरो का प्रभाव– हेनरी डेविड थोरो के "सिविल डिसओबिडिएंस" (सविनय अवज्ञा) के सिद्धांत ने गांधीजी को गहराई से प्रभावित किया।

थोरो का मानना था कि अन्यायपूर्ण कानूनों का शांतिपूर्ण ढंग से विरोध करना प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है। गांधीजी ने इसी सिद्धांत को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपनाया।[24]

सविनय अवज्ञा आंदोलन– गांधीजी ने ब्रिटिश शासन के अन्यायपूर्ण कानूनों के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया। दांडी यात्रा, नमक कानून का उल्लंघन, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा कर न देने का आंदोलन इसी विचारधारा से प्रेरित थे।

थोरो के विचारों ने गांधीजी को विकेंद्रीकरण, ग्राम स्वराज और न्यूनतम शासन की अवधारणा की ओर भी प्रेरित किया।[25]

5. सुकरात का प्रभाव– सुकरात की सत्यनिष्ठा और नैतिक साहस से गांधीजी अत्यधिक प्रभावित थे। सुकरात ने अन्यायपूर्ण आरोपों के बावजूद अपने विचारों से समझौता नहीं किया और मृत्यु दंड स्वीकार कर लिया।[26]

© Copyright @ Authors

गांधीजी ने इससे यह शिक्षा ग्रहण की कि सत्य के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को मृत्यु से भयभीत नहीं होना चाहिए। सत्याग्रह आंदोलन में उनका आत्मबल और निर्भीकता इसी प्रेरणा का परिणाम था।[27]

निष्कर्ष :–

महात्मा गांधी का संपूर्ण चिंतन भारतीय और पाश्चात्य साहित्यिक एवं दार्शनिक परंपराओं के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। भारतीय धर्मग्रंथों, विशेषकर श्रीमद्भगवद्गीता, जैन दर्शन और पारिवारिक संस्कारों ने गांधीजी को सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, अपरिग्रह और निष्काम कर्म का मार्ग दिखाया। वहीं पाश्चात्य चिंतकों और साहित्यकारों ने उनके विचारों को आधुनिक सामाजिक और राजनीतिक स्वरूप प्रदान किया।

बाइबल से उन्होंने प्रेम और क्षमा की भावना ग्रहण की, जॉन रस्किन से सर्वोदय और श्रम की समानता का सिद्धांत, लियो टॉलस्टॉय से सत्य और अहिंसा की शक्ति तथा हेनरी डेविड थोरो से सविनय अवज्ञा का विचार प्राप्त किया। गांधीजी ने इन सभी विचारों को भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप ढालकर स्वतंत्रता आंदोलन को नैतिक, मानवीय और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया। इस प्रकार गांधीजी का दर्शन केवल राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के नैतिक उत्थान और विश्वशांति का मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची :-

1. सत्य के मेरे प्रयोग, लेखक – महात्मा गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2019, पृ. 12-18
2. महात्मा गांधी : जीवन और विचार, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, पृ. 25-30
3. सत्य के मेरे प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2019, पृ. 20-24
4. बी. आर. नंदा, महात्मा गांधी : एक जीवनी, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, 2004, पृ. 32-35
5. भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर, अध्याय 2, श्लोक 62-63, पृ. 84
6. रामजी सिंह, गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2008, पृ. 88-96
7. Anasakti Yoga — M. K. Gandhi, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1951, p. 12
8. The Story of My Experiments with Truth — M. K. Gandhi, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 2007, pp. 89–92
9. सत्य के प्रयोग — महात्मा गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2018, पृ. 70–72
10. Anasakti Yoga — M. K. Gandhi, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1951, pp. 15–18
11. Hind Swaraj — महात्मा गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2019, पृ. 34–41
12. सत्य के मेरे प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2019, पृ. 94-99

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

13. गांधी दर्शन, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2012, पृ. 56-60
14. सत्य के मेरे प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2019, पृ. 165-170
15. डी. जी. तेंडुलकर, महात्मा : लाइफ ऑफ गांधी, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1963, पृ. 110-118
16. Gandhi and Jainism — Kaka Kalelkar, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1965, pp. 52–56
17. सत्य के प्रयोग — महात्मा गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2018, पृ. 94–96
18. The Story of My Experiments with Truth — M. K. Gandhi, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 2007, pp. 102–105
19. सत्य के मेरे प्रयोग, लेखक – महात्मा गांधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 2019, पृ. 58-64
20. द होली बाइबल, न्यू टेस्टामेंट, मैथ्यू 5:38-48, बाइबल सोसाइटी ऑफ इंडिया, बेंगलुरु, 2010, पृ. 8-10
21. Unto This Last, लेखक – जॉन रस्किन, George Allen Publication, London, 1907, पृ. 15-28
22. The Kingdom of God Is Within You, लेखक – लियो टॉलस्टॉय, Cassell Publication, London, 1894, पृ. 45-60
23. डी. जी. तेंडुलकर, महात्मा : लाइफ ऑफ गांधी, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1963, पृ. 132-140
24. Civil Disobedience, लेखक – हेनरी डेविड थोरो, Ticknor and Fields Publication, Boston, 1849, पृ. 12-22
25. रामजी सिंह, गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2008, पृ. 110-118
26. Apology, लेखक – प्लेटो, Penguin Classics, London, 2003, पृ. 35-48
27. गांधी और पाश्चात्य चिंतन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृ. 72-78

© Copyright @ Authors